**International Research Journal of Human Resources and Social Sciences**
**ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)**
**Impact Factor- 5.414, Volume 5, Issue 1, January 2018**
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

# तुलनात्मक साहित्य का स्वरूप

डॉ. राजेश कुमार, सहायक प्राध्यापक

रामलाल आनन्द कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

साहित्य के क्षेत्र में पठन पाठन को लेकर विविधता का होना आवश्यक है। यह साहित्य के पारम्परिक अध्ययन से अलग है और विशिष्ट भी है। हिन्दी भाषी साहित्य में विधाओं के प्रचलन के ही चर्चा व्यापक स्तर पर होती है। इस कारण यह भी है कि हिन्दी यहाँ की राष्ट्रभाषा के रूप में लोकप्रिय है। परन्तु, यह देखना आवश्यक है कि हमारा देश बहुभाषी और बहु–सांस्कृतिक है। राष्ट्र के इस भौगोलिक परिवेश में निश्चित तौर पर साहित्य की विविधता का होना लाजिमी है। अतः जहाँ पर हम हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं का विश्लेषण करतें हैं वहाँ हमारे लिए यह जानना और राय बनाना आवश्यक हो जाता है कि सभी भाषाओं ने अपने समय में किसी न किसी रूप में प्रचार प्रसार किया है जो निरन्तर आज भी जारी है। इसके साथ ही यह भी सच है कि ये सभी भाषाएँ सैवधानिक दर्जा भी हासिल किए हुए हैं। इसलिए हिन्दी के अलावा जितनी भी भारतीय भाषाएँ हैं उन सबका साहित्य आज निश्चित रूप से तुलनात्मक अध्ययन की माँग करता है।

तुलनात्मक साहित्य का अध्ययन एक तरह का बोध है जो हम किसी एक भाषा के साहित्य के साथ अन्य भाषा के साहित्य के साथ करते हैं। यूरोपीय साहित्य में यह प्रचलन बहुत पहले से स्थापित है और इसके सांस्कृतिक कारण भी हैं– भाषा और संस्कृति का ज्यादातर भिन्न न होना। एक ही विशिष्ट भाषाओं के साथ ही कई अन्य और लगभग उसके समान ही अन्य भाषाओं का पनपना आदि। किन्तु, भारतीय भाषाओं का प्रचलन व्यावहारिक रूप से अलग है। यह सत्य भी है कि हम आम बोलचाल की भाषा में अपनी संस्कृति से इतर अन्य भाषा का प्रयोग न के बराबर करते हैं। भाषा की यह व्यावहारिक जटिलता तुलनात्मक अध्ययन को और अधिक चुनौतिपूर्ण बना देती है। इसका एक अन्य कारण यह भी है कि हमारी सभी संस्कृतियों का एक समृद्ध मौखिक साहित्य भी है जिसे जाने बगैर उस भाषा साहित्य का विश्लेषण करना लगभग असम्भव है। इसलिए अध्ययन के स्तर पर अलग अलग सामाजिक और साहित्यिक अभिव्यक्तियाँ हैं जिन्हें संयोजित करना आवश्यक है।

'तुलनाम्मक साहित्य की भूमिका' में इन्द्रनाथ चौधरी ने लिखा है कि 'तुलनात्मक शब्द में तुलना करने की प्रक्रिया जुड़ी हुई है और तुलना में वस्तुओं को कुछ इस तरह प्रस्तुत किया जाता है कि जिससे उनमें साध्य या वैषम्य पता लग सके। इस दृष्टि से अंग्रेजी में तुलनात्मक शब्द का प्रयोग सन् 1958 से हो रहा है, क्योंकि इसी समय फ्रांसिस मेयरस ने इसी अर्थ को ध्यान में रखकर एक पुस्तक लिखी थी जिसका शीर्षक था, 'ए कम्पैरेटिव डिसकोर्स ऑफ आवर इंग्लिश पोयट्स विथ द ग्रीक लैटिन एंड इटालियन पोयट्स'। परंन्तु 'तुलनात्मक 'साहित्य' इन दो शब्दों का युग्म प्रयोग करते हुए पहले–पहल मैथ्यू आर्नाल्डने जब 'तुलनात्मक

**© Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

साहित्य' पद की सृष्टि की तब उनका कहना था कि पिछले पचास वर्षों में तुलनात्मक साहित्य पर ध्यान देने से यह स्पष्ट हो जाता है कि यूरोप की तुलना में इंग्लैंड इस मामले में काफी पिछड़ा हुआ है।'[प]

भारतीय भाषाओं के साहित्य का यदि लोकप्रियता के आधार पर चुनाव किया जाये तो बंगला, मराठी, पंजाबी, राजस्थानी, गुजराती, तमिल और तेलगू साहित्य ही मुख्य रूप से आज के समय में भी पाठकों के पठन–पाठन का हिस्सा हैं। इसी के साथ तुलनात्मक दृष्टि से किन्ही दो या अधिक भाषाओं का अध्ययन का आधार मूलतः तुलनात्मक अध्ययन का प्रारूप माना जाता है। 'भारत में तुलनात्मक साहित्य दो विचारसरणियों का दो साहित्य पर प्रभाव तथा दो साहित्यकारों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जाता है। रसायन विज्ञान, प्राणी विज्ञान, वायु उड्ययन विज्ञान और गणित आदि विज्ञानों में एक्यूरेसी प्रक्रिया का सहारा लिया जाता है।'[पप]'हिन्दी शब्दकोश' में डॉ. हरदेव बाहरी ने लिखा है 'तुलनात्मक रूप से कई वस्तुओं के गुणों की समानता और असमानता दिखाने वाला।'[पपप]इनमें मराठी और तमिल साहित्य तो भक्तिकाल के समय में भी अपनें चरम पर रहा है। भारत में संस्कृत के अलावा यदि कोई सबसे पुराना साहित्य है तो वह तमिल साहित्य है। पहले इस साहित्य को संगम साहित्य के नाम से जाना जाता था। ईसा पूर्व दूसरी शताब्दी से लेकर ईसा के पश्चात दूसरी शताब्दी तक के काल खण्ड में लिखे गये तमिल साहित्य को संगम साहित्य कहा जाता है। संगम साहित्य अपने शुरूआती दौर से ही समृद्ध रहा है। इसके कई कारण थे जैसे इस साहित्य के कवि अपने ज्ञान की चर्चा  तर्क वितर्क के रूप में करते थे दूसरे उस समय साहित्यिक सम्मेलनों का आयोजन एक प्रचलन के तौर पर राज्यों में निरन्तर था। साहित्य जनता के बीच कई रूपों में जीवित रहता है और जितने भी आधार साहित्य की जीवन्तता के माने जाते हैं वो सभी संगम युग में विद्यमान थे। ऐसा माना जाता है कि संगम साहित्य के अन्तर्गत 473 कवियों द्वारा रचित 2381 पद्य हैं। इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि इस काल में कवियों ने श्रुति वाचन परम्परा के माध्यम से अपने साहित्य को रचना और अभ्यास के बल पर आगे बढ़ाया। 'शिल्पाधिकारम,' 'जीवक चिन्तामणि,' 'तोल्क्पियम,' और 'मणिमेखले,' इस युग में रचित महाकाव्य माने जाते हैं। यह भी माना जाता है कि इसी अवधि के दौरान तीन संगम हुए। संरचना की दृष्टि से देखा जाये तो संगम ही नहीं सभी भाषाओं के साहित्य अपने शुरूआती दौर में कल्पना और अतिरंजना के आधिक्य से भरे पड़े हैं तो तमिल साहित्य भी इसका अपवाद नहीं है। दरअसल उस समय के साहित्य में भक्ति और आध्यात्म ने अनेक कल्पनाओं और उपमानों से साहित्यिक अभिव्यक्तियों से भर दिया।

जब भी साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन किया जाता है बंगला साहित्य की विशाल परम्परा का मोह त्यागा नहीं जा सकता। यह विपुल मात्रा में प्रकाशित है। बंगला भाषा पूरे विश्व में बहुत तादाद में बोली और समझी जाती है। कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, आलोचना और निबन्ध जैसी सभी विधाओं में बंग्ला साहित्य की अभिव्यक्तियाँ हैं। 12वीं शताब्दी के अन्त तक पुरातन बंग्ला में यथेष्ट साहित्य तैयार हो चुका था जिससे उस समय के एक बंगाली कवि ने यह गर्वोक्ति की थी 'लोग जैसा गंगा में स्नान करने से पवित्र हो जाते हैं वैसे ही 'बंगाल वाणी' स्नात होकर पवित्र हो सकते हैं' हिन्दी और बंग्ला में तुलनात्मक अध्ययन 'गीत गोविंद' के अध्ययन की तरह है क्योंकि हिन्दी और संस्कृत भाषा में गीत गोविन्द का भाषा और विषय–वस्तु के आधार पर काफी मात्रा में विश्लषण हुआ है। मध्यकाल तक बंगला साहित्य में कोई बड़ा प्रबन्ध काव्य नहीं लिखा गया जिसकी चर्चा की जा सके इससे आगे चलकर आदर्श नारी बिहुला और उसके पति लखीधर की कथा, कालकेतु और फुलरा का कथानक आदि।

तुलनात्मक साहित्य का उद्देश्य महज सतही अध्ययन नहीं है बल्कि एक विस्तृत परिप्रेक्ष्य में साहित्य का अध्ययन करना है जिससे कि उसका उचित अभिज्ञान या रसास्वादन हो सके। इसके अन्तरर्गत एक समुचित विकासधारा का विकास भी करना है। विश्व की लोकप्रिय भाषाओं का अध्ययन बहुत समय से प्रचलन में है परन्तु हमारी स्थानीय भाषाएं इस सम्बंध में अपने पुनः पाठ की प्रारम्भिक दौर में हैं। संस्कृत साहित्य में तुलनात्मक अध्ययन पहले से होता आया है जैसे कालिदास और आचार्य दण्डी की तुलना। इसी हिन्दी

साहित्य में भी सूर, तुलसी, देव और बिहारी की जनश्रुतियां प्रसिद्ध हैं। साहित्य की सभी विधाओं में संवेदना का वर्गीकृत रूप देखा जाता है जिससे की उनकी किसी एक प्रधान वृति की तुलना की जा सके जैसे– अनामदास का पोथा (हिन्दी), मृत्युन्जय (मराठी), यज्ञसेनी (उड़िया), रटाभूषण (मलयालम) आदि एक ही भाव संवेदना का बताने में सक्षम हैं। दरअसल तुलनात्मक अध्ययन ऐसे ही किया जाता है। इसी के माध्यम से सत्य का विश्लेषण किया जाता है। यह भाषा और साहित्य का विस्तृत रूप है जो मूलतः सम्बंध, परम्परा, विवेचन और प्रभाव सूत्रों की खोज करता है।

.....

[प] तुलनात्मक साहित्य की भूमिका, इन्द्रनाथ चौधरी, पृ. 1,2
[पप] साहित्य शोध के सिद्धान्त और समस्याएं, डॉ. देवराज उपाध्याय, पृ. 28
[पपप] हिन्दी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृ. 367